The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

"जनपद मेरठ के सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"

श्वेता सिंह
एम.ए.(शिक्षाशास्त्र), बी.एड

डा0 सुशील कुमार
असि0 प्रोफेसर
हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद

सारांश :-

प्राचीन भारतीय शिक्षा की मुख्य विशेषता गुरूकुल प्रणाली थी। गुरूकुल में विद्यार्थी गुरू के परिवार में रहकर वास्तविक जीवन की शिक्षा ग्रहण करता था। गुरूकुल के उच्च कोटि की वेद, साहित्य, धर्मशास्त्र, सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। शिक्षा के लिए गुरूकुल में प्रवेश लेने के बाद विद्यार्थियों पर कोई बाह्य नियंत्रण नही होता था। विद्यालय या केवल गुरू का ही पूरा नियंत्रण था। अध्यापक शिष्य का सम्बन्ध पिता–पुत्र के समान था।

मध्यकालीन युग में भी शिक्षक व छात्र के मध्य घनिष्ठ व मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। यद्यपि शिक्षक को अधिक वेतन नही दिया जाता था परन्तु समाज में अत्यन्त सम्मानीय स्थान था।

समय परिवर्तन के साथ अध्यापक की स्थिति में गिरावट आती रही, शिक्षण–कार्य धीरे–धीरे व्यदसाय बन गया और शिक्षक तथा शिक्षण केवल वेतन या आधारित हो गया। वर्तमान में अध्यापकों की सेवा संबंधी परिस्थितियों में बहुत ही परिवर्तन आया है।

अध्यापक समाज राष्ट्र का निर्माता होता है, वह जैसे गुण विद्यार्थी में विकसित करता है, राष्ट्र का विकास उसी के अनुरूप होता है, छात्र के गुण जैसे अध्ययनशीलता, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता, ईमानदारी आदि के विकास का दायित्व शिक्षक पर ही होता है। अध्यापक देश व समाज की दशा और दिशा को प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रोफेसर हुमायूँ, कबीने ठीक ही कहा है "अच्छे अध्यापको के बिना सर्वोत्तम प्रणाली की असफल हो जाती है और अच्छे अध्यापकों के साथ प्रणाली के दोष भी दूर हो जाते है" अध्यापक शिक्षा के केन्द्र में होता

है जो विद्यार्थियों को नया जीवन प्रदान करता है। जिसमें आगे चलकर वे राष्ट्र निर्माता बनते है परन्तु अध्यापक की इस महत्ता के बावजूद उसकी सुविधाओं पर ध्यान नही दिया जाता जिसका वह हकदार है, शिक्षक से अपेक्षाएँ हजारों है परन्तु सुविधाएँ बिल्कुल नगण्य है।

शिक्षक की संकल्पनाः–

बालक के सर्वागीण विकास में अध्यापक को बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है अध्यापक ही वास्तव में समुचित शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास कर सकता है। विद्यालय प्रांगण में भी अध्यापक की अति महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है। सम्पूर्ण विद्यालयी योजनाओं को वही व्यवहारिक रूप देता है जिस प्रकार, विद्यालय जीवन में प्रधानाध्यापक मस्तिष्क के रूप में होता है, अध्यापक आत्म स्वरूप होता है। आत्मा के बिना शरीर (विद्यालय) निर्जीव होता है, शिक्षक की विद्यालय जीवन का गतिदाता है।

समस्या कथनः–

जनपद मेरठ के सरकारी व गैरसरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देष्य

- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की शैक्षिक समस्याओं व तलनात्मक अध्ययन करना।
- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशासनिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वित्तीय समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँः–

- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशासनिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वित्तीय समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

- मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का परिसीमाकंनः–

सीमित समय व उचित साधनों के अभाव के कारण शोधकार्य को निम्न आधार पर सीमित किया गया है।

- प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर किया गया है।
- इस शोध हेतु मेरठ जिले को लिया गया है।
- इस शोध हेतु सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।
- इस शोध में 80 अध्यापकों का चयन न्यायदर्श के लिए किया गया है।
- शोध हेतु सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में लिया गया है।
- इस शोध हेतु 40 सरकारी अध्यापकों को लिया गया है।
- इस शोध हेतु 40 गैर सरकारी अध्यापकों को लिया गया है।

प्रस्तुत शोध के न्यादर्षः–

जैसा कि पहले वर्णित है कि प्रस्तुत शोध कार्य का समस्या कथन **"जनपद मेरठ के सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"** है। अतः इस शोध हेतु माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है। जो सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययन करवा रहे है। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन हेतु न्यादर्श के लिए निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया हैः–

- इस समस्या के अध्ययन के लिए मेरठ जिले के सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 80 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है जो कि शिक्षक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है।
- सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया है।
- इसमें 40 शिक्षक सरकारी विद्यालय के व 40 शिक्षक गैर सरकारी विद्यालय के लिए गये है।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यायदर्ष हेतु चयनित माध्यमिक विद्यालयः–

क्रम0 स0	विशेष विद्यालय का नाम	शिक्षकों की संख्या
1.	के0 के0 इण्टर कॉलेज, मेरठ	20
2.	एम0एस0एस0 इण्टर कॉलेज, मेरठ	20
3.	राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ	20
4.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मेरठ	20
	योग	80

प्रयुक्त सांख्यिकीः–

मध्यमानः मध्यमान को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि दिये गये अंक वितरण के सभी अंकों को जोडकर उसकी संख्या में भाग देने से जो वितरण प्राप्त होता है। उसे मध्यमान कहते है।

सूत्र

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

M = मध्यमान

ΣX = प्राप्तांकों का योग

N = प्राप्तांकों की संख्या

प्रामाणिक विचलनः–

"दिये हुए प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलनों के वर्गो के मध्यमान का वर्गमूल द्वारा प्राप्त मान ही प्रामाणिक विचलन है।"

– जेम्स ड्रेवर

सूत्र

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

जबकि

d = प्राप्तांकों का माध्यमान से विचलन

Σd^2 = मध्यमान से लिये गये विचलनों के वर्गो का योग

N = प्राप्तांको की संख्या

- "टी" परीक्षण (क्रान्तिक अनुपात):–

  जब अलग–अलग समूह पर परिक्षण प्रशासित करके उन समूह के मध्यमान के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करनी होती है। तब इसका प्रयोग किया जाता है इसे क्रान्तिक अनुपात भी कहा जाता है। इसकी गणना तब की जाती है जब न्यायदर्श 30 या 60 से बड़ा हो।

  इसका सूत्र निम्न हैः–

$$t = \frac{m_1 - m_2}{S.ED}$$

जहाँ m_1 = पहले समूह का मध्यमान

m_2 = प्रमाण त्रुटि

$$\sigma d = \sqrt{\frac{\sigma 1^2}{N_1} + \frac{\sigma 2^2}{N_1}}$$

σ_1 = पहले समूह का प्रमाण विचलन

σ_2 = दूसरे समूह का प्रमाण विचलन

N_1 = पहले समूह की संख्या

N_1 = दूसरे समूह ही संख्या

परिकल्पनाओं की व्याख्या एवं विवेचनाः–

"मेरठ जनपद के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् षिक्षकों की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नही है।"

स्रकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों की शैक्षिक समस्या का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या – 4.1

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक	40	14.8	2.063	4.7847
स्रकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक	40	12.0	1.61	

स्पष्टीकरण

तालिका में सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की शैक्षिक समस्या के अन्तर को दर्शाया गया है तालिका से स्पष्ट है कि दोनों के मध्य अन्तर पाया जाता है क्योंकि सरकारी स्कूलों के विषय में अभिभावक और समाज यह मानता है कि यहाँ पर शिक्षण अच्छा नहीं होता हैं लेकिन सरकारी अनुदान के कारण यहाँ पर शैक्षिक सुविधाँए बहुत ज्यादा रहती हैं। जिस कारण सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के पास अधिक कालांश को देखना पडता है अधिक से अधिक शिक्षण कार्य करना पडता है पाठ्य सहमागी क्रियाओं का आयोजन व पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का आयोजन भी देखना पडता हैं। इसके अतिरिक्त गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षक मानसिक रूप से अधिक से अधिक कार्य करने के लिए तैयार रहते है जिससे उनको पाठ्य सहमागी

क्रियाओं का आयोजन, शिक्षण कार्य, अभिलेखो का कार्य, पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव सहना पडता हैं। लेकिन उनको यह समस्या कम लगती हैं। इस कारण दोनों के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

उद्देष्य क्रमांक–2

"मेरठ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की प्रषासनिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशासनिक समस्या का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेशण एवं व्याख्या

सारणी–4.2

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
गैर सरकारी विद्यालयो में कार्यरत शिक्षक	40	16.8	1.483	3.33
स्रकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक	40	14.0	1.360	

व्याख्या–

तालिका संख्या 4.2 में सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की प्रशासनिक समस्याओं की तुलनात्मक स्थिति को दर्शाया गया है।

तालिका से स्पष्ट है कि गैर सरकारी शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.5 व 1.360 प्राप्त हुआ है दोनों के मध्य 78 स्वतंत्राष संख्या पर 3.33 क्रान्तिक मूल्य प्राप्त हुआ हैं। तालिका से प्राप्त मध्यमान व मानक विचलन तथा क्रान्तिक मूल्य दोनों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता हैं।

सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की प्रशासनिक समस्या में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

स्पष्टीकरण–

तलिका से स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों को वित्तीय समस्या का सामना करना पडता है जबकि सरकारी शिक्षकों के साथ ऐसा नहीं हैं। सरकारी शिक्षकों कों विद्यालय में सेमीनारों का आयोजन, प्रधानाध्यापक से अच्छा सम्बन्ध पर्यवेक्षण व प्रशासननीति सम्बन्ध अनेक कार्य करने पडते हैं जिस कारण सरकारी शिक्षकों का शिक्षण कार्य प्रभावित होता है जो बाद में एक समस्या का रूप धारण कर लेता

है। जबकि गैर सरकारी शिक्षकों को इन समस्याओं का सामना कम करना पडता है क्योंकि गैर सरकारी विद्यालयों में सेमिनारों का आयोजन होता है तथा प्रधानाध्यापक से सम्बन्ध भी शिक्षकों से अच्छे होते हैं तथा आए दिन उन्हे सरकारी पर्यवेक्षण आदि से भी कम गुजरना पडता हैं। जिस कारण उनमें सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा कम समस्याओं का सामना करना पडता हैं।

अतः हम कह सकते है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्या में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

"मेरठ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की वित्तीय समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वित्तीय समस्या का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या–4.3

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक	40	15.5	1.5	4.79
सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	40	13.0	1.786	

व्याख्याः–

तलिका संख्या 4.3 में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वित्तीय समस्या के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर को दर्षाता गया है।

तलिका से स्पष्ट है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यर शिक्षको की वित्तीय समस्या का मध्यमान व मानव विचलन क्रमशः 15.5 व 1.5 प्राप्त हुआ है। 78 स्वतंत्राष संख्या पर 4.79 क्रान्तिक मूल्य प्राप्त हुआ है। प्राप्त कांतिक मूल्य का मान सार्थकता स्तरों के मान से अधिक है जो शिक्षकों का मध्यमान व मानव विचलन क्रमशः 13.0 व 1.788 प्राप्त हुआ है। प्राप्त कांतिक मूल्य के आधार पर हम अन्तर को देख सकते है और कहा जा सकता है कि सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वित्तीय समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती ळें

स्पष्टीकरणः–

तलिका 4.3 से प्राप्त मध्यमान व मानव विचलन व क्रान्तिक अनुपात मूल्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इससे यह सिद्ध होता है कि वित्तीय समस्याओं को लेकर सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों के मध्य अन्तर पाया जाता है। सरकारी शिक्षक वेतन, भत्ता, छात्रावास, वित्त व्यवस्था व ऋण सम्बन्धी अनेक सुविधाएँ प्राप्त

होती है जो सरकारी शिक्षकों को आर्थिक रूप से अधिक मजबूती प्रदान करती है क्योकि सरकारी शिक्षकों को सरकार से अच्छा वेतन, भत्ता, ऋण व पेन्शन आदि अन्य सुविधाएँ भी प्राप्त होती हैं जबकि गैर सरकारी शिक्षकों को यह सभी सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती है।

गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को अच्छा वेतन नही मिलता है और न ही कोई भत्ता प्राप्त होता है। उनकों किसी प्रकार का ऋण भी नही सरकार तथा बैंक से प्राप्त नही होता है जिस कारण उनको वित्तीय समस्याओं का आये दिन सामना करना पड़ता है। इसी आधार पर हम कह सकते है कि सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वित्तीय समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

"मेरठ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में षिक्षकों की भौतिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नही है।"

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों की भौतिक समस्या का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपाल का विष्लेषण एवं व्यवस्था

सारणी संख्या – 4.4

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक	40	14.9	1.337	3.74
सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक	40	13.0	1.84	

व्याख्याः–

तलिका संख्या 4.4 में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक समस्या के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर को दर्शाया गया है।

तलिका से स्पष्ट है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक समस्या का मध्यमान विचलन क्रमशः 14.9 व 1.337 प्राप्त हुआ है। जबकि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक समस्या का मध्यमान क्रमशः 13 व 1.84 प्राप्त हुआ है। दोनो के मध्य 72 स्वतंत्राष संख्या पर 3.74 क्रान्तिक मूल्य प्राप्त हुआ है।

तालिका से प्राप्त क्रांतिक मूल्य का मान सार्थकता स्तरों से कम है जो दोनो शिक्षकों की भौतिक समस्या में अन्तर को स्पष्ट करता है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

स्पष्टीकरणः–

तालिका 4.4 से स्पष्ट है कि दोनो शिक्षकों के मध्य भौतिक समस्या को लेकर सार्थक अन्तर पाया जाता है। सरकारी शिक्षकों को गैर सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा कम भौतिक समस्याओं का सामना करना पडता है। क्योकि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को विद्यालय के वातावरण के साथ समायोजन कक्षाकक्ष विधियों के साथ समायोजन, पुस्तकालयों की देखभाल, स्टाफ के साथ समन्वय व प्राथमिक सुविधाओं के साथ तालमेल बिठाना पडता है जबकि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के साथ ये समस्या कम आती है। इस आधार पर हम कह सकते है कि भौतिक समस्या के सन्दर्भ में सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्या में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शोध के निष्कर्षः–

- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक समस्या में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राशसनिक समस्या में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वित्तीय समस्यसा में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भौतिक समस्या में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क0स0	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम
1	राय, पी0एन0	''अनुसंधान परिचय'' लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा
2	गुड चार्टर वी0 (उद्धत)	''अनुसंधान परिचय'' लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा
3	मूले, जार्ज जे0के0	''द साइन्स ऑफ एजुकेशन रिसर्च'' यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस, न्यू देहली
4	सुखीया एच0के0	''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
5	ष्शर्मा, आर0ए0	''शिक्षा अनुसंधान'' सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
6	राजजादा, बी0एस0	''शिक्षा में अनुसंधान के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
7	सरीन, डॉ0 शशीकला	''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ''
8	डॉ0 अजंनी	विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
9	बुच, एम0बी0	''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन''
	बुच, एम0बी0	''फीपत सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन''

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/01

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

श्वेता सिंह एवं डा0 सुशील कुमार

for publication of research paper title

"जनपद मेरठ के सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com